Multidisciplinary International Magazine
(Peer-Reviewed)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
Volume 6, Issue 65, September 2020

JANKRITI जनकृति

बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
(विशेषज्ञ समीक्षित)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
वर्ष 6, अंक 65, सितंबर 2020

मध्यकालीन संस्कृति में संत नामदेव की उपादेयता

जगदाले अप्पासाहेब गोरक्ष
शोधार्थी
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
हिन्दी विभाग
धर्मशाला -176215
Email: jagadaleappasaheb@gamil.com
मो 9089868247 8787679094

सारांश

भारतीय भाषाओं में संत साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। संत साहित्य में शास्त्रीय, तत्वविवेचक, कथात्मक, काव्यात्मक स्फुट व दीर्घ, गद्य-पद्य आदि विविध वाङ्मय का समावेश होता है, जिसने मनुष्य को किसी जातीयता की दृष्टि से न देखकर समग्र मानवता के आत्मकल्याण के विकास की बात की है। हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल में मराठी संत नामदेव का स्थान बहुत ही अग्रणीय रहा है। संत नामदेव का जन्म महाराष्ट्र के सतारा जिले के 'नरसी' नामक गाँव में (1192 ई.) हुआ तथा मृत्यु पंढरपुर में (1272 ई.) को हुई थी। संत नामदेव के कृतित्व का प्रयोजन मूलतः भक्ति है। इस भक्ति के कारण व्यक्तित्व व कृतित्व एक-दूसरे के समरूप होकर काव्य-अभंग को मधुरता आ गई। संत नामदेव को मराठी साहित्य में तीर्थयात्री होने का आद्य श्रेय प्राप्त है। उनकी भक्ति प्रेरणा से मराठी एवं हिन्दी जगत लाभान्वित हो गया था। संत कबीर ने संत नामदेव की भक्ति पर उद्गार उदरित किए है-" भक्ति के प्रेमी जैदेव नामा" (दीक्षित, त्रिलोकीनारायण, हिन्दी का संत साहित्य, पृ.सं.29) संत नामदेव ने अपने व्यक्तित्व के धरातल पर महाराष्ट्र प्रांत के बाहर जाकर पंजाब प्रांत में अनेक वर्षों तक वास्तव्य किया था। उत्तर भारत की जनता विदेशी आक्रमण आहात होकर हिन्दू-मुस्लिम दो भाग विभाजित होकर उनमें आपसी वैमनस्य एवं द्वेष की स्थिति निर्मित हुई थी, जिससे मध्यकाल के लगभग सभी संतों ने अपने भक्ति व पंथ के द्वारा तत्वज्ञान को आचरण में लाकर तथा संस्कृति में आया जड़त्व को दूर करने का प्रयास किया।

बीज-शब्द

समाज-व्यवस्था,धर्म, नीति, पाखंड, जातियता, ईश्वर भक्ति

आमुख

हिन्दी साहित्य के मध्यकाल को 'स्वर्ण युग' कहा जाता है। भारतीय संस्कृति में संतों के कार्य अतुल्य योगदान रहा है। उनमें शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, रामानंद, जयदेव, संत नामदेव, रैदास, कबीर, गुरु नानक देव आदि संत कवियों ने अपना सामाजिक उद्देश्य को किसी एक विशिष्ट वर्ग या भौगोलिक क्षेत्र में रहकर नहीं दिया बल्कि समग्रता से मानव को दिया है। मराठी संत ने 'वारकरी पंथ' से महाराष्ट्र की सांस्कृतिक एकता का उत्कृष्ट दर्शन करवाया, उसमें अलग-अलग प्रांत के लोग भी सम्मिलित होते गए। संत ज्ञानदेव-नामदेव, एकनाथ, तुकाराम, समर्थगुरु रामदास आदि संतकवियों को महाराष्ट्र की संस्कृति का पंचप्राण माना जाता है। उसके बाद राष्ट्रसंत तुकोडोजी महाराज ने भी अपने

Scanned by TapScanner

समय में महाराष्ट्र के समाज एवं संस्कृति का संवर्धन स्वच्छता का संदेह से दिया। संत एकनाथ ने समाज को सांसारिक जीवन का त्याग न करके आध्यात्मिक साधना करने का उचित आदर्श दिया। भारतीय संस्कृति में कीर्तन की महत्ता के परिप्रेक्ष्य में मराठी विद्वान ह.भ.प.निम्बराज जाधव ने लिखा है "भारतीय संस्कृति के इतिहास में कीर्तन की परंपरा को अन्यय स्थान है। इस पवित्र परंपरा ने संत संत साहित्य को सामान्य जनता तक पहुंचाने का कार्य किया। उसमें कला-गुण का मिलाप करके कीर्तन ईश्वर को अधिक सौन्दर्य संपन्न किया। कीर्तन के माध्यम से संस्कृति व नीतिमूल्य अबाधित रखकर सत प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया और विकृति पर निरबंधन लाद दिया। इतना ही न होकर जब-जब राष्ट्र पर संकट आ गया उस समय संत ने सक्रियता से कार्य किया।"[1] वह समय मराठी वाङ्मय और संस्कृति के उगम का दौर कहा जाता है। हर समाज अपने संस्कृति रूढ़ि,परंपरा के अनुसार कुलदैवतों की पूजा की जाती है। संत एकनाथ ने सांसारिक जीवन का त्याग न करके आध्यात्मिक साधना करने का उचित आदर्श समाज को दिया। सांसरिक जीवन संस्कृति का महत्त्वपूर्ण हिस्सा होता है। संतों ने ईश्वर भक्ति को आत्मा के साथ जोड़कर समाज में मानवीयता को जागृत किया। संत नामदेव ने अपना समाजहित का कार्य मराठी के लोकभाषा से बताने का प्रयास किया। उसके लिए हिन्दी एवं पंजाबी भाषा को काव्य के लिए आत्मसात किया। जिससे उत्तर भारत में विदेशी आक्रमणकारियों में तुर्क, मंगोल ने समाज, संस्कृति में बाधा पहुंचायी थी परंतु संत नामदेव ने अपने कीर्तन भक्ति के द्वारा सांस्कृतिक मूल्यों का संवर्धन करने का कार्य किया। उसके लिए संत ज्ञानदेव-नामदेव ने यात्रा के द्वारा 'वारकरी पंथ' की विचारधारा को महाराष्ट्र से उत्तर भारत में प्रस्थापित किया। वह सिर्फ 'वारकरी पंथ' की विचार धारा नहीं थी बल्कि उसमें आध्यात्मिक एवं सामाजिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक प्रेरणा का निहित मानवी बोध था। संत नामदेवकालीन समय में पुरुष प्रधान संस्कृति का ही वर्चस्व था और स्त्रियों का समाज में दोयम दर्जा का स्थान प्राप्त था। संत नामदेव की प्रेरणा से संतकवयित्रीयों में संत जनाबाई, गोणाई, राजाई, कान्होपात्रा, निर्मला आदि ने भक्ति से स्त्री-जीवन की निराशा और समाज का स्त्रियों के प्रति देखने का दृष्टिकोण बदल दिया। संत नामदेव ने कीर्तन से मराठी संस्कृति के साथ उत्तर भारत की संस्कृति का संवर्धन करने का कार्य किया। तत्कालीन समय में समाज में धार्मिक कर्मकांड का बोलबाला बढ़ था और जिससे समाज में अज्ञान बढ़ रहा था। संत नामदेव ने उसके लिए भक्ति के रूप में कीर्तन को अपनाकर जनता जनार्धन में ज्ञान की ज्योत लगाकर प्रकाशित किया।

'नाचू कीर्तनाचे रंगी। ज्ञानदीप लावू जगी।'

उत्तर भारत में तुर्क एवं मंगोल का हमला होने से हिन्दू-मुस्लिम समाज में दूरी निर्मित हुई थी। संत नामदेव उन्हें सांस्कृतिक एकता का निर्वहन करके आपसी एकता को अबाधित रखने की बात करते है।

विठूचा गजर। हरीनामचा झेंडा रोविला।[3]

उक्त पंक्ति से आशय है कि ईश्वरीय या विट्ठल नाम के गजर से मनुष्य के मन का द्वेष व हीन-भावना को दूर होने को प्रेरणा मिलती है। इसलिए संत नामदेव ने हरिनाम की ध्वज स्थापित की। उस समय समाज में एक ओर धार्मिक कट्टरता तो दूसरी ओर जातिगत भेदभाव था लेकिन इन सब स्थिति में संत नामदेव का सामाजिक कार्य को भक्ति के माध्यम से एकसूत्र में मिलाया था। संत नामदेव ने पंजाब में जातिभेद और कर्मकांड का विरोध किया।

'का करौ जाति का करौ पाति। हारि का नाम गाइ दिन-राति॥'[4]

इस तरह से गुरु नानक देव ने समाज में जाति-भेद रहित ईश्वर भक्ति का संदेश यात्रा के माध्यम से दिया। इसलिए

Scanned by TapScanner

संतों का भक्ति मार्ग में सांस्कृतिक मूल्य निहित होने से समाज को अधिक वंदनीय लगा। संत नामदेव कालीन समाज में नीम्न वर्ग एवं जातियों के लोगों को धार्मिक ग्रंथ से एवं शिक्षा से दूर रखा था। संत नामदेव अपने काव्य में ऐसे नीम्न वर्ग के लोगों को विद्या ग्रहण व अधिकार की बात करते हैं और तत्कालीन समाज व्यवस्था को सवाल ही करते हो।

पांडे मोहि पढ़ावहु हरि। विद्या अपनी राषउ धरी॥
बारह अक्षर की बाहर खड़ी। हरि बिन पढ़िबे की आषड़ी॥
रसी मेमी अषिरा। पार उतारै भाव सागरा॥
हम तुम पांडे कैसा बाद। रामनाम पढ़िहै प्रहिलाद॥
पतरा पोथी परहा करी। रामनाम जपि दुस्तर तरी॥
थभा मांही प्रगटयो हरि। नामदेव को स्वामी नरहरी॥[5]

संत नामदेव कि यह भक्ति के द्वारा कही बात उस समय में कितनी क्रांतिकारी रही होगी! भारत में जहाँ पर एक औए बाहरी आक्रमण का बोलबाला था तो दूसरी ओर धर्म-परिवर्तन होकर जनता पर जजिया कर लागाया जा रहा था। जिससे देश की सामाजिक स्थिति बहुत ही कठीण थी। संत नामदेव सांस्कृतिक मूल्य अबाधित रखने की बात करते हुए मनुष्य में विषय-वासना उत्पन्न होती है। उसे हरि रामनाम के भजन गायन करना नहीं छोड़ना चाहिए। यह हरिनाम मनुष्य के जीवन व समाज में उचित समतोल रखता है। ऐसे विठ्ठल या ईश्वर पर विश्वास रखना आवश्यक है, उस हरिनाम से सब कार्य सुचारु रूप से होता है।

मन करी आपुले वासना ते वारी। सर्व हेचि हरि भजन जाया।

ब्रह्मानाम गोविंद नाही भेदाभेद। तुटे भावबंध हरि नामें॥

साढी लगबग न करी तू आलस। विठ्ठली विश्वास असो देणे॥

नामा म्हणे ब्रह्म हेचि निरूपण। सर्व काम पूर्ण याच्या नामें॥[6]

संस्कृति में मानवी मूल्य उत्कृष्ट दर्शन होता है। जिसका संबंध मनुष्य के काम, क्रोध, मध, मत्स्य आदि से संबंधित होता है और वह मनुष्य के जीवन चरित्र का महत्त्वपूर्ण हिस्सा होता है। जिससे मनुष्य के जीवन यापन से समाज, संस्कृति एवं मानवी मूल्य पर प्रभाव पड़ता है। मनुष्य के जीवन में धर्म एवं संस्कृति का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। हम अपने धर्म के अनुसार पूजा-विधि एवं व्रत का पालन करते हैं। संत नामदेवकालीन समाज अपना धर्म का वास्तविक रूप धूमिल हो रहा था तथा धर्म के नाम पर पाखण्ड परक भक्ति का बोलबाला बढ़ने लगा था। ऐसी स्थिति का संत नामदेव ने वर्णन करते है-

जोग जग जप तप तीरथ व्रत मन राखे इन पास।
दान पुनि धर्म दया दीनता, हरि की भगती उदास।
भजि भगवंत भजन भजि प्रानी चाडे अणेरी आस।
करना करन सुभासुभ भजि करि, कौन भयो निज दास॥
कोमल विमल संत जन सूरा करै तुम्हारी आस।
तिन पर कृपा करो तुम केशव प्रणवत नामदेव दास॥[7]

भक्त पर ईश्वर की कृपा होने से उसका जीवन बदल जाता है। संत नामदेव बाह्यडबर परक धार्मिक कृत्य करनेवालों को आंतरिक मन से ईश्वर भजन करने की बात की है। तभी ही आप पर केशव कृपा कर सकता है। ईश्वर के दरबार में दान धर्म करके भजन करते है। उसके लिए जप-तप –व्रत मन से करने पर आत्म विश्वास का बल मिलता है। क्योंकि केशव को भक्त के मिलने की आस लगती है। ईश्वर मार्ग बताने से हर कोई अपने को ज्ञाता समझता है परंतु उसका सच्चा मार्ग संत जान पाये है। आज भी लोग धर्म के नाम पर भोली जनता पर अत्याचार करते है। कोई मनुष्य परनारी पर आसक्ती का भाव रखता है। उसकी अधोगति होना तय है। इसलिए संत ने मानवी उद्धार के समग्र चिंतन की बात की है।

ऐसे राम ऐसे हेरा। राम छाडी चित अनत न फेरौ॥

Scanned by TapScanner

Multidisciplinary International Magazine
(Peer-Reviewed)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
Volume 6, Issue 65, September 2020

JANKRITI जनकृति

बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
(विशेषज्ञ समीक्षित)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com

आपसी प्रेम को को प्रकट किया है। उसका प्रभाव समाज में आज भी किसी न किसी रूप में विद्यमान रहा है।

संदर्भ ग्रंथ

1.मोहिते, शिवाजीराव, (2008) संत साहित्य आणि वारकरी संप्रदाय, क्रमवीर प्रकाशन, पुणे,
.2पाठक,यशवंत,(1980) नाचू कीर्तनाचे रंगी कॉन्टिनेन्टल प्रकाशन विजयानगर, पुणे , पृ.सं.32
3. संत साहित्य (2014) विशेषांक मई-जुलाई 2014, पृ.सं.23
4. अभिजात स्मरणिका, (2015) 88 वाँ अखिल भारतीय मराठी साहित्य संमेलन घुमान, पृ.41
.5सकल श्रीनामदेवगाथा (1970) सं. महाराष्ट्र सांस्कृतिक मंडल मुंबई,अभंग 2233 पृ.840
.6वही, अभंग 711 पृ.273
.7वही, अभंग 2148 पृ.844
.8वही , अभंग 2164 पृ.819
9 वही, अभंग 2217पृ.835
.10 मिश्र, डॉ. रामचन्द्र ((1967 संत नामदेव और हिन्दी पद साहित्य, शैलेन्द्र साहित्य संदन, फर्रुखाबाद पृ.103

Scanned by TapScanner